



Study AV Kand 13 Hindi

AV 13.4.1 to 56

अध्यात्म देवता

कुछ प्रकाशित ग्रन्थों में अथर्ववेद के 13वें काण्ड के चतुर्थ सूक्त के 56 मन्त्रों को सूक्त-4 से 9 तक अर्थात् 6 सूक्तों में व्यक्त किया गया है। जो निम्न प्रकार से हैं :-

सूक्त-4 में 1 से 13 मन्त्र हैं,
सूक्त-5 में 14 से 21 मन्त्र हैं,
सूक्त-6 में 22 से 28 मन्त्र हैं,
सूक्त-7 में 29 से 45 मन्त्र हैं,
सूक्त-8 में 46 से 51 मन्त्र हैं,
सूक्त-9 में 52 से 56 मन्त्र हैं।

हमने इन सभी मन्त्रों को सूक्त-4 के अन्तर्गत ही माना है, क्योंकि इन सभी मन्त्रों के देवता 'अध्यात्म' ही है।

AV 13.4.1

स एति सविता स्व दिवस्पृष्टे ऽ वचाकशत् ।

(सः) वह (आत्मन्) (एति) प्राप्त करता है, जाता है (सविता) सबका निर्माता, सबका प्रेरक (स्वः) आनन्द, ज्ञान का प्रकाश तथा प्रकाशवान (दिवः) दिव्य, अन्तरिक्ष (पृष्टे) पिछले भाग पर (अव चाकशत्) देखता हुआ, प्रकाशित करता हुआ।

व्याख्या :-

परमात्मा कौन है?

परमात्मा कहाँ है?

परमात्मा क्या करता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



वह सबका निर्माता और प्रेरक, ज्ञान का प्रकाश और प्रकाशवान, अन्तरिक्ष स्थान पर जाता है, सबकुछ देखता हुआ और प्रत्येक स्थान को प्रकाशित करता हुआ।

जीवन में सार्थकता :-

क्या परमात्मा हमारे लिए व्यक्तिगत है या सबका है?

परमात्मा प्रत्येक जीव का निर्माता और प्रेरक है। वास्तव में वह सबकुछ है। वह अन्तरिक्ष स्थान की पीठ पर बैठा है। हमारे शरीर में, ब्रह्मरन्ध्र हमारा आकाशीय स्थान है, हमारे मस्तिष्क के सर्वोच्च शिखर पर। यदि मस्तिष्क को आकाश की तरह शुद्ध और पवित्र रखा जाये, सभी वृत्तियों से मुक्त, केवल तभी उस ब्रह्मरन्ध्र में परमात्मा की अनुभूति होती है। जिस प्रकार वह हम सबके लिए व्यक्तिगत है, वह समूचे ब्रह्माण्ड के लिए भी वैसे ही है। वह सबको देखता है और सबको प्रकाशित करता है। यह सम्पूर्ण सूक्त परमात्मा की स्थाई और सम्पूर्ण अस्तित्व की वास्तविकता को स्थापित करता है।

AV 13.4.2

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः।

(रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किसर प्रकार सर्वविद्यमान है?

अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक को, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा का ज्ञान कहाँ पर है?

हम उस सर्वविद्यमान के अंग किस प्रकार बन सकते हैं?

परमात्मा इस ब्रह्माण्ड में सभी स्थानों पर अपने ज्ञान के प्रकाश को फैलाते हैं और उसके साथ ही सर्वविद्यमान हो जाते हैं। हमें भी उसी प्रकार से अपने अस्तित्व को उसी में मिला देना चाहिए, उससे शुद्ध भक्ति के माध्यम से दिव्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और उस ज्ञान के शुद्ध प्रकाश को सब स्थानों पर विस्तृत करना चाहिए। हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम उसी सर्वविद्यमान, सनातन का हिस्सा हैं।

सूक्ति :-

(रश्मिभिः नभः आभृतम् महेन्द्र एति आवृतः)

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक को, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

AV 13.4.3

स धाता स विधर्ता स वायुर्नभ उच्छ्रितम्
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः।

(सः) वह (धाता) निर्माता (सः) वह (विधर्ता) पालन करके विशेष रूप से धारण करता है (सः) वह (वायुः) गति के साथ विशाल व्यापकता वाली (नभः) सबका प्रबन्ध करता और सबको बांधने वाला (उच्छ्रितम्) अत्यन्त उत्तम, सबसे ऊपर (रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

व्याख्या :-

परमात्मा किस प्रकार सबसे उत्तम है?

वह निर्माता है; वह सबका पोषण करते हुए विशेष रूप से धारण करता है; वह गति के साथ विशाल व्यापकता वाला है; वह सबका प्रबन्ध कर्ता और बांधने वाला है; वह अत्यन्त उत्तम है; सबके शिखर पर।

अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक का, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

माया क्या है?

एक आध्यात्मिक व्यक्ति माया को किस प्रकार देखता, समझता है?

इस ब्रह्माण्ड को बनाने के बाद परमात्मा ने इसका त्याग नहीं कर दिया। वह इस सारे ब्रह्माण्ड में प्रत्येक प्राणी को पोषित करते हुए धारण करता है। वह सभी स्थानों पर वायु के समान गति से विद्यमान है और इस प्रकार सबको बांधते हुए वह सबका प्रबन्ध करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस ब्रह्माण्ड में प्रत्येक कार्य का कर्ता केवल परमात्मा ही है। समूचा ब्रह्माण्ड केवल उसी की अभिव्यक्ति है। इसलिए अपने आपमें यह ब्रह्माण्ड न तो वास्तविक है और न स्थाई। अतः यह सृष्टि केवल एक 'माया' अर्थात् अज्ञानता है जो हमें यह विश्वास करने के लिए मजबूर कर देती है कि समस्त वस्तुएं अलग-अलग हैं। किन्तु एक आध्यात्मिक व्यक्ति प्रत्येक वस्तु में उसी परमात्मा को देखता है, जिस प्रकार दर्पण में हमारी छवि केवल हमारी अभिव्यक्ति ही होती है जो दर्पण के दूसरी तरफ वास्तविक नहीं होती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.4

सो ऽर्यमा स वरुणः स रुद्रः स महादेवः
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ।

(सः) वह (अर्यमा) सभी श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करने वाला और सभी दुरित मनो में से दुरित विचारों का नाश करके प्रबन्ध करने वाला (सः) वह (वरुणः) सबके द्वारा स्वीकार किये जाने योग्य (सः) वह (रुद्रः) दुरितों को रूलाने वाला (ज्ञान के प्रकाश से तथा सभी कार्यों का फल देने की शक्ति से) (सः) वह (महादेवः) वह महान् सर्वोच्च और दिव्य दानी (रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

व्याख्या :-

परमात्मा दुरित और श्रेष्ठ लोगों का प्रबन्ध इकट्ठा कैसे करता है?

परमात्मा सभी श्रेष्ठों का सम्मान करता है और दुरित मानसिकता वाले लोगों के दुरित विचारों का नाश करके उनका प्रबन्धन करता है; वह सबके द्वारा स्वीकार किये जाने के योग्य है। वह दुरितों को रूलाने वाला (ज्ञान के प्रकाश से तथा सभी कार्यों का फल देने की शक्ति से); वह महान् सर्वोच्च और दिव्य दानी है।

अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक को, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

देर-सवेर सभी परमात्मा के समक्ष क्यों आते हैं?

क्योंकि परमात्मा निर्माता है और उसके बाद वह ब्रह्माण्ड में सर्वविद्यमान हो गया। वह प्रत्येक विचार को जानता है और सभी कार्यों का समान और विपरीत फल देने की शक्ति रखता है। वह श्रेष्ठ पुरुषों का सम्मान करता है। वह सुधार और दण्ड की प्रक्रिया के माध्यम से दुरित लोगों का प्रबन्धन करता है। इसीलिए वह सबके द्वारा पसन्द किया जाता है। अश्रेष्ठ लोग भी उसे पसन्द करते हैं। क्योंकि वह उन्हें प्रेरणा के माध्यम से सुधार के अनेक अवसर देता है, अन्यथा परमात्मा दुरित व्यवहारों के बदले दण्ड देता है जिससे वे लोग भी उसके निकट आ सकें। वे परमात्मा की सर्वोच्चता स्वीकार करते हैं और उसके निकट आकर प्रार्थना करते हैं, अपने बुरे कार्यों का प्रायश्चित्त करते हैं और श्रेष्ठता तथा उदारता का संकल्प लेते हैं। इस प्रकार देर-सवेर प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा के सामने घुटनों के बल आ जाता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.5

सो अग्निः स उ सूर्यः स उ एव महायमः ।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ।

(सः) वह (अग्निः) आग, ऊर्जा, नेतृत्व करने में प्रथम (सः) वह (उ) और (सूर्यः) सूर्य, ऊर्जा उत्पत्ति स्थान (सः) वह (उ) और (एव) केवल (महायमः) सर्वोच्च और महान् नियन्ता, न्यायकारी, अधिष्ठाता (रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है ।

व्याख्या :-

सबको ऊर्जा देने वाला और उसका अधिष्ठाता कौन है?

परमात्मा अग्नि, ऊर्जा और नेतृत्व करने में प्रथम है और वह ऊर्जा का उत्पत्ति स्थान अर्थात् सूर्य है और वह नियमन करने की सर्वोच्च और महान् प्रेरणा, न्यायकारी, नियामक और अधिष्ठाता है (हमारे द्वारा ऊर्जा के उपयोग पर नियंत्रण और उसे संतुलित करने के लिए) ।

अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक को, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है ।

जीवन में सार्थकता :-

ऊर्जा देने वाला हमारे प्रयासों पर नियंत्रण के लिए किस प्रकार एक अधिष्ठाता बन जाता है?

हम जो भी धारण करते हैं वह केवल परमात्मा के द्वारा हमें दी गई ऊर्जा के कारण ही है । यदि ऊपरी रूप से कोई व्यक्ति अपने प्रयासों से अपनी कमाई गई सम्पदा और ज्ञान पर दावा करे तो भी उसे यह विचार करना चाहिए कि प्रत्येक प्रयास का मूल आधार तो परमात्मा के द्वारा दी गई ऊर्जा ही है जो बिना किसी भेदभाव के, निःसंदेह हमारे अपने-अपने पूर्व कर्मों के अनुसार हमें प्राप्त होती है । वह शक्ति, जो हमें कुछ भी हमारे प्रयोग के लिए देती है, उसे उस वस्तु या शक्ति के उचित उपयोग पर नियंत्रण करने का पूरा अधिकार है ।

हमारे माता-पिता, हमारे शरीर, मन और अन्य प्रकार की सम्पदाओं के दाता हैं । उनका यह प्राकृतिक अधिकार है कि वे हम पर पूरा नियंत्रण रखें । प्रत्येक पुत्र और पुत्री को यह सिद्धान्त अपने मन में रखना चाहिए कि भविष्य में वे अपने बच्चों से क्या आशा करेंगे । इसी प्रकार, हमारे अध्यापक हमारे ज्ञान के दाता हैं, प्रत्येक समाज और सरकार हमें अनेकों सुविधाएँ देती है, हमारे नियोक्ता हमें सम्पदा और सुविधाएँ देते हैं, हमारे ग्राहक हमारी आजीविका के स्रोत हैं । इन सभी दाताओं का नैतिक तथा/अथवा कानूनी अधिकार है कि वे हमारे प्रयासों पर नियंत्रण और उनमें संतुलन सुनिश्चित करें कि हम उन्हें उसके बदले में क्या दे रहे हैं ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.6

तं वत्सा उप तिष्ठन्त्येकशीर्षाणो युता दश।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः॥ 6॥

(तम्) उसको (परमात्मा को) (वत्सा) प्राण या दिशाएँ (उप तिष्ठन्ति) निकट बैठना (एकशीर्षाणः) एक सिर वाला (युता) परस्पर जुड़े हुए (दश) दस (रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

व्याख्या :-

हमारे प्राण परमात्मा से किस प्रकार जुड़े हैं?

सभी दिशाएँ किस प्रकार परमात्मा से जुड़ी हैं?

परस्पर जुड़े हुए दस प्राण उस (परमात्मा) के निकट बैठते हैं जिसका एक ही सिर है (ब्रह्मरन्ध्र)।

परस्पर जुड़ी हुई दस दिशाएँ उस (परमात्मा) के निकट बैठती हैं जिसका एक ही सिर है (सूर्य)।

अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक को, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की अनुभूति करने में हमारी कौन सहायता कर सकता है?

सभी दिशाएँ सूर्य से किस प्रकार ऊर्जा लेती हैं?

हमारे शरीर में, परमात्मा की अनुभूति ब्रह्मरन्ध्र में हो सकती है, हमारे मस्तिष्क के शिखर पर यह अनुभूति प्राणों की ऊर्जा को रोककर ब्रह्मरन्ध्र पर ध्यान लगाने से ही आती है।

परमात्मा ने समूचे बादलों के समूह को अपने प्रकाश और ज्ञान से भरा हुआ है, उसी प्रकार हमें अपनी सारी ऊर्जाओं के साथ परमात्मा पर ध्यान एकाग्र करना चाहिए।

इस ब्रह्माण्ड में जब सभी दिशाएँ परस्पर जुड़कर सूर्य के निकट मिलती हैं तो उन सबको अपनी-अपनी दिशाओं में विस्तार करने के लिए प्रकाश और ऊर्जा प्राप्त होती है।

AV 13.4.7

पश्चात्प्रांच आ तन्वन्ति यदुदेति वि भासति।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः॥ 7॥

(पश्चात्) पीछे (परमात्मा) (प्रांचः) आगे फैलाते हुए (आ तन्वन्ति) सर्वत्र फैलाते हुए (यत्) जब (उदेति) प्रगति, उत्थान, प्रकाशित (वि भासति) विशेष दीप्ति, चमक के साथ (रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

सभी दिव्य शक्तियाँ अपनी दीप्ति सर्वत्र किस प्रकार फैलाती हैं?

परमात्मा के पीछे सभी दिव्य शक्तियाँ, गति से आगे बढ़ती हुई, जब ये दिव्य शक्तियाँ प्रगति करती हैं या अपनी दीप्ति के साथ और चमक के साथ प्रकाशित होती हैं तो अपनी शक्तियों को सर्वत्र फैलाती हैं।

अपनी किरणों के साथ (प्रकाश की, ज्ञान की), महान इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, समूचे बादलों के समूह को, द्युलोक को, आकाश को भरता है और इस प्रकार सभी वस्तुओं और स्थानों को सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्य शक्तियाँ और लोग किस प्रकार परमात्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं?

जिस प्रकार परमात्मा सर्वत्र अपने ज्ञान के प्रकाश को फैलाते हैं, उसी प्रकार उसी दिव्य शक्तियाँ जैसे सूर्य तथा अन्य आकाशीय शरीर और ज्ञान से प्रकाशित ऋषि अपने-अपने कार्यों में आगे बढ़कर अपनी शक्तियों को फैलाते हैं जो विशेष दीप्ति के साथ स्वयं प्रकाशित हो चुके होते हैं।

इस प्रकार सभी दिव्य शक्तियाँ और लोग परमात्मा का प्रतिनिधित्व करते हैं।

AV 13.4.8

तस्यैष मारुतो गणः स एति शिक्वाकृतः ॥ ४ ॥

(तस्य) उसका (परमात्मा का) (एष) ये (मारुतः गणः) प्राणों का समूह (सः) वह (परमात्मा) (एति) प्राप्त करता है (प्राण, श्रद्धालु) (शिक्वा कृतः) ऊपर बनाया गई पट्टी (अन्तरिक्ष में लटकी हुई)।

व्याख्या :-

परमात्मा प्राणों को किस प्रकार प्राप्त करते हैं?

इन प्राणों का समूह परमात्मा से सम्बन्धित है। वही ऊपर बनाई गई एक पट्टियों (अन्तरिक्ष में स्थापित) के रूप में इन्हें प्राप्त करता है (प्राणों को और श्रद्धालुओं को)।

जीवन में सार्थकता :-

आध्यात्मिक जीवन में प्राणों की क्या भूमिका और स्तर है?

प्राणों के समूह को आत्माओं का समूह भी समझा जा सकता है। केवल प्राणों के कारण ही हमारे शरीर के अन्दर जीव तत्त्व अर्थात् हमारा आत्मा हमें जीव बनाता है।

केवल इन्हीं प्राणों के माध्यम से ही हम परमात्मा के साथ पूर्ण एकता या अनुभूति महसूस कर सकते हैं जिसके लिए हमें अपने मन की सभी बाधाओं का नाश करना होगा।

इसका अर्थ यह है कि प्रत्येक आत्मा, प्रत्येक प्राण परमात्मा के अत्यन्त निकट है, बल्कि परमात्मा में सम्मिलित है। किन्तु मन की अज्ञानता अर्थात् माया के कारण हम समूची अस्थाई सृष्टि और अपने नाम तथा रूप को वास्तविक मानने की गलती करते हैं जिसके कारण स्थाई और वास्तविक परमात्मा

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



के मार्ग को भूल जाते हैं जो समूचे अन्तरिक्ष में हमारे एकदम निकट अर्थात् हमारे ब्रह्मरन्ध्र में लटका हुआ है।

AV 13.4.9

रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः ॥ 9 ॥

(रश्मिभिः) अपनी किरणों से (प्रकाश की, ज्ञान की) (नभः) विशाल बादलों का समूह, द्युलोक, आकाश (आभृतम्) भरा हुआ (महेन्द्र) महान् इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक (एति) प्राप्त करता है, जाता है (आवृतः) सभी दिशाओं से आच्छादित करता है।

व्याख्या :-

अथर्ववेद 13.4.2 के समान

AV 13.4.10

तस्येमे नव कोषा विष्टम्भा नवधा हिताः ॥ 10 ॥

(तस्य) उसका (परमात्मा का) (इमे) ये हैं (नव) नौ (कोषा) कोष, द्वार (दो कान, दो आंखें, दो नासिका, मुख, मलद्वार और मूत्रेन्द्रीय) (विष्टम्भा) विशेष स्तम्भ (नवधा) नव प्रकार के, नव स्थानों पर (हिताः) स्थापित।

व्याख्या :-

हमारे भीतर परमात्मा के द्वारा नौ विशेष कोष कौन से हैं?

नौ कोष अर्थात् नौ द्वार (दो कान, दो आंखें, दो नासिका, मुख, मलद्वार और मूत्रेन्द्रीय) उसके (परमात्मा के) नौ स्थानों पर स्थापित विशेष स्तम्भ हैं।

जीवन में सार्थकर्ता :-

हमारे शरीर में इन द्वारों का क्या महत्त्व है?

परमात्मा ने नौ द्वारों (दो कान, दो आंखें, दो नासिका, मुख, मलद्वार और मूत्रेन्द्रीय) का निर्माण किया और इन सभी स्थानों को विशेष शक्तियाँ प्रदान की। इसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से यह था कि एक शरीर को सुविधाजनक तरीके से रहने के लिए सभी आवश्यक कार्य करने हेतु योग्यता प्राप्त हो। जिससे वह परमात्मा के अभिव्यक्त के रूप में इस सृष्टि को देख सके, उसका आनन्द ले और फिर वापिस परमात्मा के पास आ जाये, सृष्टि की वस्तुओं से अपनी इन्द्रियों को वापिस बुलाकर, उस परमात्मा को उसके अव्यक्त रूप में देखने का प्रयास करे।

ये नौ द्वार सभी मानवों को परमात्मा के द्वारा विशेष शक्तियों के रूप में दिये गये।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.11

स प्रजाभ्यो वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न॥11॥

(सः) वह (प्रजाभ्यः) सभी प्रजा, सन्तानें (वि पश्यति) विशेष रूप से देखता है, ध्यान रखता है (यत्) जो (च) और (प्राणति) प्राणों का प्रयोग करने वाला, धारक (यत्) जो (च) और (न) नहीं।

व्याख्या :-

क्या परमात्मा सभी जीवों और निर्जीव पदार्थों को देखता है और उनका ध्यान रखता है? वह (परमात्मा) अपनी सृष्टि के सभी पदार्थों को विशेष रूप से देखता है और उनका ध्यान रखता है अर्थात् जो प्राणों को धारण करते हैं और प्रयोग करते हैं अर्थात् सभी जीव तथा वे भी जो प्राणों को धारण और प्रयोग नहीं करते अर्थात् निर्जीव पदार्थ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की सर्वविद्यमानता, सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमानता को कैसे सिद्ध करें? क्योंकि यह मन्त्र घोषित करता है कि परमात्मा सभी जीवों और निर्जीव पदार्थों को देखते हैं और उनका ध्यान रखते हैं, इसका स्वाभाविक अभिप्राय है कि वह सबको देखने के लिए सर्वत्र विद्यमान है; वह सब वस्तुओं और सब जीवों का ध्यान रखने के लिए सबसे अधिक शक्तिशाली है। अतः वह सर्वशक्तिमान है; वह जीवों और वस्तुओं के बारे में जानता है। अतः वह सर्वज्ञाता है। परमात्मा के इस तत्त्व के अस्तित्व की खोज करने के लिए अर्थात् प्रत्येक अणु और उसके प्रत्येक अंग अर्थात् इलेक्ट्रॉन, प्रोटोन और न्यूट्रॉन की मूल ऊर्जा की खोज करने के लिए पश्चिमी विश्व ने अकल्पनीय विशाल खर्चा किया और इस खोज में कई दशक लगाये जो कार्य पहले से ही इस सृष्टि के प्रारम्भ से पवित्र वेदों में व्यक्त किया गया था और महान् और दिव्य दृष्टा ऋषियों ने इस तथ्य और सिद्धान्त को अपनी ध्यान अवस्था में ही देख लिया था।

AV 13.4.12

तमिदं निगतं सहः एष एक एकवृदेक एव॥12॥

(तम्) उसको (परमात्मा) (इदम्) इस (निगतम्) निश्चित रूप से धारण करता है (सहः) वह (एषः) है (एकः) एक (एक वृत्तम्) एक वृत्त, सबको घेरता हुआ (एकः एव) निश्चित रूप से एक ही है।

व्याख्या :-

कौन एक और केवल एक सर्वोच्च है? वह (परमात्मा) निश्चित रूप से (केवल एक होने का अर्थात् सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता) बल और शक्ति धारण करता है। वह एक वृत्त में एक ही है। जिसने सबको घेर रखा है और निश्चित रूप से वह एक ही है।

जीवन में सार्थकता :-



परमात्मा अद्वितीय अर्थात् अद्वैत कैसे है?

अथर्ववेद 13.4.11 में यह स्थापित करने के बाद कि परमात्मा सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता है जिससे वह सभी जीवों और निर्जीव पदार्थों को देख सके और उनका ध्यान रख सके, यह वर्तमान मन्त्र स्थापित करता है कि परमात्मा निश्चित रूप से एक है और केवल एक ही सर्वोच्च शक्ति है तथा शेष सबकुछ और सभी जीव उसमें से उत्पन्न हुए हैं। अतः परमात्मा के बारे में अद्वितीय अर्थात् अद्वैत का सिद्धान्त इस वर्तमान और आगे के मन्त्रों में स्थापित होता है।

सूक्ति :-

(सहः एषः एकः एक वृत्तम् एकः एव) वह एक वृत्त में एक ही है। जिसने सबको घेर रखा है और निश्चित रूप से वह एक ही है।

AV 13.4.13

एते अस्मिन्देवा एकवृत्तो भवन्ति ।।13।।

(एते) यह सब (अस्मिन्) उसमें (परमात्मा में) (देवाः) दिव्यताएँ (दिव्य शक्तियाँ, लोग और विचार) (एक वृत्तः) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (भवन्ति) है।

व्याख्या :-

सभी दिव्यताओं का मूल क्या है?

सभी दिव्यताएँ (दिव्य शक्तियाँ, लोग और विचार) उस (परमात्मा) वृत्त में एक ही हैं जो सबको घेरता है।

जीवन में सार्थकता :-

सभी दिव्यताएँ कहाँ सम्मिलित होती हैं?

परमात्मा सभी दिव्य शक्तियों और लोगों का स्रोत है, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, जल, भूमि, तारे और सभी ग्रह आदि असंख्य दिव्य शरीरों का स्रोत परमात्मा ही है। वे सभी परमात्मा से ही उत्पन्न होते हैं और सदैव परमात्मा में ही सम्मिलित रहते हैं।

इसी प्रकार वे सभी महान् आत्माएँ जो किसी भी रूप में पूजा के द्वारा, प्रेम के द्वारा, तपस्याओं के द्वारा, योग और ध्यान-साधनाओं के द्वारा दिव्य शक्तियाँ अर्जित करते हैं वे सदैव परमात्मा में ही सम्मिलित रहते हैं जिससे उन्होंने ये शक्तियाँ प्राप्त की हैं।

(एते अस्मिन् देवाः एक वृत्तः भवन्ति)

सभी दिव्यताएँ (दिव्य शक्तियाँ, लोग और विचार) उस (परमात्मा) वृत्त में एक ही हैं जो सबको घेरता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.14 & 13.4.15

कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च ब्राह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च।।14।।

(कीर्तिः) प्रसिद्धि (च) और (यशः) लोगों की विशाल संख्या के द्वारा स्वीकार्यता (च) और (अम्भः) ज्ञान, बल, अमृत अवस्था (च) और (नभः) प्रबन्ध करने का बल, प्रकाशवान (च) और (ब्राह्मण वर्चसम्) परमात्मा के ज्ञान का वैभव (च) और (अन्नम्) अनाज (च) और (अन्नाद्यम् च) और अन्य खाद्य पदार्थ।

AV 13.4.15

य एतं देवमेकवृत्तं वेद।।15।।

(यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृत्तम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

व्याख्या :-

परमात्मा की अद्वितीयता में विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में क्या अर्जित करता है? जो कोई भी यह जानता है और विश्वास करता है कि सर्वोच्च दिव्य (परमात्मा) एक वृत्त है, सबको घेरे हुए है और सभी स्थानों पर विद्यमान है, उसे निम्न लाभ होते हैं :-

1. प्रसिद्धि,
2. लोगों की विशाल संख्या के द्वारा स्वीकार्यता,
3. ज्ञान, बल, अमृत अवस्था,
4. प्रबन्ध करने का बल, प्रकाशवान,
5. परमात्मा के ज्ञान का वैभव,
6. अनाज और अन्य खाद्य पदार्थ।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के एक होने और उसकी सर्वोच्चता में विश्वास करने का क्या प्रभाव होता है? हमारे जीवन का एक आधार, सभी सुख-सुविधाओं का एक आधार, सभी उपलब्धियों की एक शक्ति यह विश्वास करने और अनुभूति प्राप्त करने के लिए है कि सभी जीवों और निर्जीव पदार्थों में परमात्मा ही एक शक्ति है और सर्वोच्च है। जब हम वास्तविक क्रियात्मक रूप से परमात्मा की अद्वितीयता पर विश्वास करने लगते हैं तो उस एक विश्वास के कारण हमारी प्रसिद्धि और स्वीकार्यता निश्चित हो जाती है। इस विश्वास के साथ हमारा जीवन शुद्ध हो जाता है और परिणामस्वरूप हमारे कार्य और व्यवहार सुख पूर्वक जीवन के लिए सभी साधन उपलब्ध करवाते हैं। इससे भी ऊपर परमात्मा के एकमात्र होने और उसकी सर्वोच्चता का विश्वास हमें अपने जीवन में पूर्ण संतोष महसूस करने में सहायता करता है और हम भौतिक सुखों के लिए नहीं मरते। इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्ति को जो भी लाभ होते हैं वह सबके कल्याण के लिए यज्ञ कार्यों में ही प्रयोग होते हैं। क्योंकि वह सभी में एक का ही अस्तित्व महसूस करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.16, 17 & 18

AV 13.4.16

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद।।16।।

(न) नही (द्वितीयः) दूसरा (न) नही (तृतीयः) तीसरा (चतुर्थः) चौथा (न अपि उच्यते) न ही कहा जाता (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृतम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

AV 13.4.17

न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद।।17।।

(न) नही (पंचम्) पांचवाँ (न) नही (षष्ठः) छटा (सप्तमः) सातवाँ (न अपि उच्यते) न ही कहा जाता (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृतम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

AV 13.4.18

नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
य एतं देवमेकवृतं वेद।।18।।

(न) नही (अष्टमः) आठवाँ (न) नही (नवमः) नौवाँ (दशम् न अपि उच्यते) न ही दसवाँ कहा जाता (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृतम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

व्याख्या :-

परमात्मा की एकात्मता को विशेष रूप में किस प्रकार स्थापित किया गया है?

इन तीन मन्त्रों में परमात्मा की एकात्मता अर्थात् अद्वैत को विशेष रूप से स्थापित करते हुए दस बार दोहराया गया है।

जो कोई भी यह जानता है और विश्वास करता है कि सर्वोच्च दिव्य (परमात्मा) एक वृत्त है, सबको घेरे हुए है और सभी स्थानों पर विद्यमान है, ऐसे व्यक्ति के लिए न कोई दूसरा है, न कोई तीसरा है

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



और न कोई चौथा है; न कोई पांचवाँ है, न कोई छठा है और न कोई सातवाँ है; न कोई आठवाँ है, न कोई नौवाँ है और न कोई दसवाँ है।
इसका अभिप्राय यह है कि असंख्य नाम और रूपों की भिन्नता के बावजूद वह एक ही सब वस्तुओं में अभिव्यक्त है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की एकात्मता को स्थापित करने के मन्त्रों की क्या श्रृंखला है?

गणित का आधार कहाँ पर है?

अथर्ववेद 13.4.15 के अनुसार जब परमात्मा केवल एक ही सर्वोच्च शक्ति है; अथर्ववेद 13.4.11 और 12 के अनुसार जब परमात्मा सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता है; अथर्ववेद 13.4.13 के अनुसार जब सभी दिव्य शक्तियाँ उस एक से ही पैदा होती हैं और उसी में सम्मिलित रहती हैं तो उसकी एकात्मता या अद्वैत सिद्धान्त पर कोई प्रश्न, आपत्ति या संदेह नहीं रह जाता। इस सृष्टि में सबकुछ केवल उसी की अभिव्यक्ति है, अतः वास्तव में वह अकेला ही वास्तविक और स्थाई अस्तित्व है।

इसके अतिरिक्त अथर्ववेद 13.4.16, 17 और 18 गणित के आधार को भी स्थापित करते हैं, अर्थात् वैदिक काल से 10 की गिनती अर्थात् शून्य का प्रयोग भी ऋषियों के ज्ञान में रहा है। गणित भी सृष्टि के साथ और ज्ञान के साथ परमात्मा का एक दिव्य उपहार है, इसे बाद के युगों में नहीं खोजा गया।

AV 13.4.19

स सर्वस्मै वि पश्यति यच्च प्राणति यच्च न।

य एतं देवमेकवृत्तं वेद।।19।।

(सः) वह (सर्वस्मै) वे सब (वि पश्यति) विशेष रूप से देखता है, ध्यान रखता है (यत्) जो (च) और (प्राणति) प्राणों का प्रयोग करने वाला, धारक (यत्) जो (च) और (न) नहीं (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृत्तम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

नोट :- इस मन्त्र अथर्ववेद 13.4.19 और अथर्ववेद 13.4.11 में केवल एक शब्द की भिन्नता है। 11वें मन्त्र में 'प्रजाभ्यः' शब्द का प्रयोग हुआ है जबकि मन्त्र 19 में 'सर्वस्मै' शब्द आता है। इन शब्दों की भिन्नता के बावजूद अर्थ में कोई भिन्नता नहीं पैदा होती है। इसके अतिरिक्त 19वें मन्त्र में एक पद जोड़ा गया है जो अथर्ववेद 13.4.15 में आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा के सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता होने के सिद्धान्त को निश्चित रूप से और सरलता के साथ कौन स्वीकार करता है?

जो कोई भी यह जानता है और विश्वास करता है कि सर्वोच्च दिव्य (परमात्मा) एक वृत्त है, सबको घेरे हुए है और सभी स्थानों पर विद्यमान है, वह निश्चित रूप से और सरलता से स्वीकार करता है कि वह (परमात्मा) अपनी सृष्टि के सभी पदार्थों को विशेष रूप से देखता है और उनका ध्यान रखता है अर्थात् जो प्राणों को धारण करते हैं और प्रयोग करते हैं अर्थात् सभी जीव तथा वे भी जो प्राणों को धारण और प्रयोग नहीं करते अर्थात् निर्जीव पदार्थ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

धरती से सारी समस्याओं को दूर करने के लिए कोन सा मूल विश्वास और अनुभूति है?
परमात्मा के सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता होने के सिद्धान्त अर्थात् एकात्मता या अद्वितीयता या अद्वैत ही वह मूल आधार है जिससे हम परमात्मा के अन्य लक्षणों में भी विश्वास कर सकते हैं। इस मूल विश्वास और अनुभूति के अभाव में ही अज्ञानता, भिन्नता, विवाद, समस्याएँ और आतंकवाद विद्यमान है। यदि लोगों को उनके अस्तित्व की एकात्मता में विश्वास के प्रति शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाये तो कोई भी व्यक्ति अन्य लोगों को हिंसित नहीं करेगा।

(सः सर्वस्मै वि पश्यति यत् च प्राणति यत् च न)

वह (परमात्मा) अपनी सृष्टि के सभी पदार्थों को विशेष रूप से देखता है और उनका ध्यान रखता है अर्थात् जो प्राणों को धारण करते हैं और प्रयोग करते हैं अर्थात् सभी जीव तथा वे भी जो प्राणों को धारण और प्रयोग नहीं करते अर्थात् निर्जीव पदार्थ।

AV 13.4.20

तमिदं निगतं सहः स एष एक एकवृदेक एव।
य एतं देवमेकवृतं वेद।।20।।

(तम) उसको (परमात्मा) (इदम्) इस (निगतम्) निश्चित रूप से धारण करता है (सहः) वह (एषः) है (एकः) एक (एक वृत्तम्) एक वृत्त, सबको घेरता हुआ (एकः एव) निश्चित रूप से एक ही है। (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृत्तम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

व्याख्या :-

यह मन्त्र अथर्ववेद 13.4.12 और 15 को मिलाकर व्यक्त किया गया है। इस संयुक्त मन्त्र का उद्देश्य परमात्मा की एकात्मता अर्थात् अद्वितीयता या अद्वैत सिद्धान्त पर ध्यान केन्द्रित करना है जिससे उसे सर्वोच्च ज्ञान और सर्वोच्च शक्ति के रूप में सब स्थानों पर एक विद्यमान के रूप में जाना जा सके। अतः यह मन्त्र परमात्मा की एकात्मता के साथ उसकी तीन सर्वोच्चताओं को संयुक्त करता है – सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता। वह एक वृत्त में एक ही है। जिसने सबको घेर रखा है और निश्चित रूप से वह एक ही है।

AV 13.4.21

सर्वे अस्मिन्देवा एकवृतो भवन्ति।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



य एतं देवमेकवृतं वेद ।।21।।

(सर्वे) ये सब (अस्मिन्) उसमें (परमात्मा में) (देवाः) दिव्यताएँ (दिव्य शक्तियाँ, लोग और विचार) (एक वृतः) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (भवन्ति) है (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृतम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

व्याख्या :-

यह मन्त्र अथर्ववेद 13.4.13 और 15 का संयुक्त मन्त्र है जिसमें केवल एक शब्द की भिन्नता है। 13वें मन्त्र में 'एते' शब्द का प्रयोग हुआ है जबकि 15वें मन्त्र में उसके स्थान पर 'सर्वे' शब्द का प्रयोग किया गया है, दोनों का अर्थ एक ही है।

इस संयुक्त मन्त्र का उद्देश्य यह है कि परमात्मा की सभी दिव्यताएँ (दिव्य शक्तियाँ, लोग और विचार) उस (परमात्मा) वृत्त में एक ही हैं जो सबको घेरता है।

जो कोई भी यह जानता है और विश्वास करता है कि सर्वोच्च दिव्य (परमात्मा) एक वृत्त है, सबको घेरे हुए है और सभी स्थानों पर विद्यमान है। उसके लिए सभी शक्तियाँ एक ही परमात्मा से उत्पन्न होती हैं और उसी में सम्मिलित रहती हैं और वही एक सर्वोच्च ज्ञान और सर्वोच्च शक्ति के रूप में सब जगह विद्यमान है।

AV 13.4.22

ब्रह्म च तपश्च कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च ब्राह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च ।

य एतं देवमेकवृतं वेद ।।22।।

(ब्रह्म) परमात्मा का ज्ञान (च) और (तपः) तपस्याएँ (च) और (कीर्तिः) प्रसिद्धि (च) और (यशः) लोगों की विशाल संख्या के द्वारा स्वीकार्यता (च) और (अम्भः) ज्ञान, बल, अमृत अवस्था (च) और (नभः) प्रबन्ध करने का बल, प्रकाशवान (च) और (ब्राह्मण वर्चसम्) परमात्मा के ज्ञान का वैभव (च) और (अन्नम्) अनाज (च) और (अन्नाद्यम् च) और अन्य खाद्य पदार्थ (यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृतम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

व्याख्या :-

परमात्मा की एकात्मता और सर्वोच्चता में विश्वास करने के अतिरिक्त लाभ क्या हैं?

जो कोई भी यह जानता है और विश्वास करता है कि सर्वोच्च दिव्य (परमात्मा) एक वृत्त है, सबको घेरे हुए है और सभी स्थानों पर विद्यमान है, उसे निम्न लाभ होते हैं :-

1. परमात्मा का ज्ञान,
2. तपस्याओं वाला जीवन,
3. प्रसिद्धि,
4. लोगों की विशाल संख्या के द्वारा स्वीकार्यता,
5. ज्ञान, बल, अमृत अवस्था,
6. प्रबन्ध करने का बल, प्रकाशवान,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



7. परमात्मा के ज्ञान का वैभव,
8. अनाज और अन्य खाद्य पदार्थ।

जीवन में सार्थकता :-

एक श्रद्धालु भक्त को परमात्मा का पवित्र प्रकाश कैसे प्राप्त होता है? परमात्मा की सर्वोच्चता और एकात्मता में विश्वास के बल पर कोई भी व्यक्ति तपस्याओं वाला जीवन जीना प्रारम्भ कर देता है, वह भौतिकता की अन्धी दौड़ में शामिल नहीं होता। वह उच्च चेतना के स्तर पर जीवन जीता है और निश्चित रूप से परमात्मा के पवित्र प्रकाश का ज्ञान प्राप्त करते हुए उसकी अनुभूति भी कर लेता है। 14वें मन्त्र में बताये गये लाभों के अतिरिक्त यह लाभ हैं।

AV 13.4.23 & 24

AV 13.4.23

भूतं च भव्यं च श्रद्धा च रुचिश्च स्वर्गश्च स्वधा च॥23॥

(भूतम्) भूतकाल (च) और (भव्यम्) भविष्यकाल (च) और (श्रद्धा) श्रद्धा, भक्ति (च) और (रुचिः) रुचि (च) और (स्वर्गः) स्वर्गतुल्य, सुविधाजनक परिस्थिति (च) और (स्वधा) स्वयं को धारण करते हुए (च) और।

AV 13.4.24

य एतं देवमेकवृतं वेद॥24॥

(यः) जो कोई (एतम्) इस (देवम्) दिव्य (सर्वोच्च) (एक वृतम्) एक वृत्त, सबको घेरे हुए (वेद) जानता है।

व्याख्या :-

परमात्मा की एकात्मता को जानने वाले को क्या आध्यात्मिक लाभ होता है? जो कोई भी यह जानता है और विश्वास करता है कि सर्वोच्च दिव्य (परमात्मा) एक वृत्त है, सबको घेरे हुए है और सभी स्थानों पर विद्यमान है, उसे निम्न आध्यात्मिक लाभ होते हैं :-

1. भूतकाल का ज्ञान,
2. भविष्य का ज्ञान,
3. श्रद्धा भक्ति,
4. परमात्मा में रुचि,
5. स्वर्ग के तुल्य सुविधाजनक परिस्थितियाँ,

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



6. स्वयं को धारण करता है (स्वयं में जीता है)।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की एकात्मता में विश्वास करने वाला व्यक्ति आध्यात्मिक पथ पर किस प्रकार प्रगति करता है?

परमात्मा की एकात्मता और सर्वोच्चता में विश्वास करने और उसकी अनुभूति के बाद एक श्रद्धालु अपने भूतकाल और भविष्यकाल दोनों को सुन्दर बना लेता है। परमात्मा के प्रति उसकी श्रद्धा भक्ति पूर्ण समर्पित हो जाती है, परमात्मा में उसकी रुचि बढ़ जाती है, भौतिक सुखों में उसकी रुचि कम हो जाती है, वह सर्वोच्च आत्मा अर्थात् परमात्मा के स्तर पर अपने जीवन का ध्यान करते हुए सदैव हर परिस्थिति को सुविधाजनक, स्वर्ग के तुल्य और दिव्य समझता है।

AV 13.4.25

स एव मृत्युः सो ऽमृतं सो ऽभ्वं 1स रक्षः।25।।

(सः) वह (एव) केवल है (मृत्युः) मृत्यु (सः) वह (अमृतम्) मोक्ष (मृत्यु से मुक्ति) (सः) वह (अभ्वम्) महान् (सः) वह(रक्षः) संरक्षक।

व्याख्या :-

परमात्मा की महानता के क्या कारक हैं?

वही केवल मृत्यु है; वही मृत्यु से मुक्ति है अर्थात् मोक्ष है; वह महान् है; वह सबका संरक्षक है।

जीवन में सार्थकता :-

इस सृष्टि में परमात्मा के तीन महत्वपूर्ण कार्य क्या हैं?

यह एक सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य है कि परमात्मा केवल एक ही है जो हर प्रकार से सर्वोच्च है अर्थात् सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता अर्थात् इस ब्रह्माण्ड के अस्तित्व की एक ही सच्चाई और प्रत्येक कार्य का कर्त्ता। इन शक्तियों के कारण ही वह हमारे जन्म और मृत्यु का कारण है और इस चक्र से मुक्ति का कारण भी है। मृत्यु का अर्थ है परमात्मा हमारी व्यक्तिगत आत्मा को पुनः जन्म प्रदान करते हैं, जबकि मुक्ति का अर्थ है कि हमने उस सर्वोच्च शक्ति को एक ही वास्तविकता मानते हुए उसमें स्वयं को सम्मिलित होने की अनुभूति प्राप्त कर ली है और उसके साथ एकता महसूस कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में श्रद्धालु मृत्यु के बाद पुनः जन्म प्राप्त नहीं करता।

परमात्मा की महानता इस बात में है कि वह सबको बिना भेदभाव के संरक्षण देने की शक्ति रखता है। उसके संरक्षण का अर्थ यह है कि केवल वही हमें महान्, दिव्य और बहादुरी के कार्य करने के लिए और अहंकार और इच्छाओं के बिना तपस्या वाला जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है

यह मन्त्र परमात्मा के तीन महत्वपूर्ण कार्यों को स्थापित करता है :- निर्माण, पालन-पोषण और विनाश।

(सः एव मृत्युः सः अमृतम्)

वही केवल मृत्यु है; वही मृत्यु से मुक्ति है अर्थात् मोक्ष हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.26

स रुद्रो वसुवनिर्वसुदेये नमोवाके वषट्कारोऽ नु संहितः ।।26।।

(सः) वह (रुद्रः) बुराईयों को रूलाने वाला (वसुवनिः) गौरवशाली सम्पदा को प्राप्त करने वाला विजेता (वसुदेये) गौरवशाली सम्पदा का देने वाला (नमोवाके) श्रद्धा और विनम्रता के भाव में (वषट्कारः) दिव्यताओं का (दिव्य शक्तियों और लोगों का) (अनु संहितः) सदैव, लगातार स्थापित है।

व्याख्या :-

परमात्मा हमें किस प्रकार उचित ज्ञान प्रदान करते हैं?

गौरवशाली सम्पदा को देने वाला और प्राप्त करने वाला कौन है?

वह किस भाव में स्थापित है?

वह बुराईयों को रोने के लिए मजबूर कर देता है (सभी कार्यों के फल देने की उसकी गर्जना करती हुई वज्र शक्ति का उद्देश्य सुधार करके उचित ज्ञान देना है); गौरवशाली सम्पदा का वही दाता है और वही प्राप्तकर्ता है; वह सदैव और लगातार दिव्यताओं (दिव्य शक्तियों और दिव्य लोगों) की श्रद्धा और विनम्रता के भावों में स्थापित है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की तीन सर्वोच्चताओं अर्थात् सर्वविद्यमानता, सर्वशक्तिमानता और सर्वज्ञाता को किस प्रकार सिद्ध करें?

यह मन्त्र भी परमात्मा की तीन सर्वोच्चताओं अर्थात् सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता को सिद्ध करता है। वह हमारे सभी कार्यों का फल देने की शक्ति के कारण सर्वशक्तिमान है। इसे उसकी गर्जना करती हुई वज्र शक्ति माना जाता है। जो प्रत्येक व्यक्ति पर नियंत्रण करने और उसे उचित ज्ञान देने के लिए सबसे महत्वपूर्ण वज्र है। यह शक्ति उसके सर्वज्ञाता होने को भी सिद्ध करती है। उसकी सर्वविद्यमानता प्रत्येक प्राप्तकर्ता और प्रत्येक दाता में उसकी उपस्थिति से सिद्ध होती है। हम उसके भाव को प्रत्येक विनम्र व्यवहार और उसके प्रति श्रद्धा में कही गई उसकी प्रशंसा और महिमागान के शब्दों में महसूस कर सकते हैं। इसका अर्थ यह है कि वह किसी भी सामान्य व्यक्ति के द्वारा किये गये महान् और दिव्य कार्यों में महसूस किया जा सकता है, क्योंकि वही एक ऐसा है जो अच्छे और बुरे सबमें पूर्ण सम्पर्क के रूप में उपस्थित है।

AV 13.4.27

तस्येमे सर्वे यातव उप प्रशिषमासते ।।27।।

(तस्य) उसका (परमात्मा) (इमे) ये (सर्वे) सभी (यातवः) गतिशील (समूचा संसार गतिशील है) (उप – आसते से पूर्व लगाकर) (प्रशिषम्) उत्तम शासन (आसते – उप आसते) पूजा, स्वीकार्यता।



व्याख्या :-

परमात्मा के शासन को कौन स्वीकार करता है और उसकी पूजा करता है?
यह सारा गतिशील जगत उसके (परमात्मा के) उत्तम शासन को स्वीकार करता है और उसकी पूजा करता है। (जगत अथवा संसार का शाब्दिक अर्थ है सदैव गतिशील, सदैव प्रवाहित, परिवर्तनशील)।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा किस प्रकार सर्वोच्च शासक है?

क्या कोई व्यक्ति नास्तिक हो सकता है?

यह मन्त्र भी उस परमात्मा की सर्वोच्चता को स्थापित करता है जिसका शासन प्रत्येक जीव के द्वारा स्वीकार किया जाता है और उसकी पूजा की जाती है। सभी जीवों को प्रत्येक कार्य, विचार या वाणी का फल देने की गर्जना करती हुई वज्र शक्ति के कारण, प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक वस्तु उस सर्वोच्च शासक के अधीन ही है। वह सभी राष्ट्रों के शासकों से भी ऊपर शासक है। अपनी गर्जना करती हुई वज्र शक्ति के कारण उसमें तीन सर्वोच्चताएँ हैं अर्थात् सर्वविद्यमान, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञाता।

सर्वोच्च शासक होने के नाते वह सभी जीवों को और निर्जीव वस्तुओं को भिन्न-भिन्न प्रकार की ऊर्जाएँ प्रदान करता है। क्योंकि परमात्मा इस गतिशील जगत का शासक है, इसका अर्थ यह है कि सारा संसार परमात्मा के कारण ही गतिशील है।

क्योंकि परमात्मा इस समूचे गतिशील संसार का शासक है तो कोई भी व्यक्ति उस परमात्मा के अस्तित्व या उसके शासन से इन्कार कैसे कर सकता है। अतः कोई भी व्यक्ति नास्तिक अर्थात् परमात्मा में विश्वास न करने वाला हो ही नहीं सकता।

AV 13.4.28

तस्यामू सर्वा नक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह ।।28।।

(तस्य) उसका (परमात्मा का) (अमू) वे (सर्वा) सभी (नक्षत्रा) आकाशीय तारे और तारा मण्डल (वशे) नियंत्रण में (चन्द्रमसा) चन्द्रमा (सह) के साथ।

व्याख्या :-

यह सभी तारे इत्यादि किसके नियंत्रण में हैं?

चन्द्रमा सहित सभी तारे और तारा मण्डल उस परमात्मा के नियंत्रण में है।

जीवन में सार्थकता :-

समूची सृष्टि का शासक कौन है?

सभी तारे तथा अन्य आकाशीय शरीर परमात्मा के शासन और नियंत्रण में ही गतिशील हैं। परमात्मा का शासन भूमि तक ही सीमित नहीं है, अपितु यह अन्तरिक्ष में सभी आकाशीय शरीरों पर भी लागू होता है। अतः, परमात्मा पूरी सृष्टि का सर्वोच्च शासक है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.29

स वा अह्नोऽजायत तस्मादहरजायत ।।29।।

(सः) वह (वा) वह (परमात्मा) (अह्नः) दिन के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (अहः) दिन (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा दिन के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) दिन के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि दिन उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है।

(सः वा अह्नः अजायत तस्मात् अहः अजायत)

वह (परमात्मा) दिन के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि दिन उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है।

AV 13.4.30

स वै रात्र्या अजायत तस्माद्रात्रिरजायत ।।30।।

(सः) वह (वै) वह (परमात्मा) (रात्र्या) रात्रि के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (रात्रिः) रात्रि (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा रात्रि के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) रात्रि के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि रात्रि उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होती है।

AV 13.4.31

स वा अन्तरिक्षादजायत तस्मादन्तरिक्षमजायत ।।31।।

(सः) वह (वा) वह (परमात्मा) (अन्तरिक्षात्) आकाश, अन्तरिक्ष के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (अन्तरिक्षम्) आकाश, अन्तरिक्ष (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा आकाश के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) आकाश, अन्तरिक्ष के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि आकाश और अन्तरिक्ष उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.32

स वै वायोरजायत तस्माद्वायुरजायत ।।32।।

(सः) वह (वै) वह (परमात्मा) (वायोः) वायु के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (वायुः) वायु (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा वायु के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) वायु के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि वायु उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होती है।

AV 13.4.33

स वै दिवो ऽजायत तस्माद् द्यौरध्यजायत ।।33।।

(सः) वह (वै) वह (परमात्मा) (दिवः) सूर्य के द्वारा, प्रकाश और दिव्यताओं से भरपूर (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (द्यौः) सूर्य, प्रकाश और दिव्यताओं से भरपूर (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा सूर्य के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) सूर्य के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि सूर्य उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है।

AV 13.4.34

स वै दिग्भ्यो ऽजायत तस्मादिशो ऽ जायन्त ।।34।।

(सः) वह (वै) वह (परमात्मा) (दिग्भ्यः) सभी दिशाओं के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (दिशः) सभी दिशाएँ (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा सभी दिशाओं के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) सभी दिशाओं के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि सभी दिशाएँ उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.35

स वै भूमेरजायत तस्माद्भूमिरजायत ।।35।।

(सः) वह (वै) वह (परमात्मा) (भूमेः) भूमि के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (भूमिः) भूमि (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा भूमि के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) भूमि के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि भूमि उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होती है।

AV 13.4.36

स वा अग्नेरजायत तस्मादग्निरजायत ।।36।।

(सः) वह (वा) वह (परमात्मा) (अग्नेः) अग्नि, ऊर्जा के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (अग्निः) अग्नि, ऊर्जा (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा अग्नि, ऊर्जा के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) अग्नि, ऊर्जा के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि अग्नि, ऊर्जा उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होती है।

AV 13.4.37

स वा अदभ्यो ऽजायत तस्मादापोऽजायन्त ।।37।।

(सः) वह (वा) वह (परमात्मा) (अदभ्यः) जल के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (आपः) जल (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा जल के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) जल के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि जल उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.38

स वा ऋग्भ्यो ऽजायत तस्मादृचोऽ जायन्त ।।38।।

(सः) वह (वा) वह (परमात्मा) (ऋग्भ्यः) ऋचाओं अर्थात् मन्त्रों से (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (ऋचः) ऋचाएँ अर्थात् मन्त्र (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा ऋचाओं के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) ऋचाओं के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि ऋचाएँ उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होती हैं।

AV 13.4.39

स वै यज्ञादजायत तस्माद्यज्ञो ऽ जायत ।।39।।

(सः) वह (वै) वह (परमात्मा) (यज्ञात्) यज्ञों, कल्याणकारी कार्यों के द्वारा (अजायत) उपस्थित होता है (तस्मात्) उसके द्वारा (परमात्मा के द्वारा) (यज्ञः) यज्ञ, कल्याणकारी कार्य (अजायत) उपस्थित होता है।

व्याख्या :-

परमात्मा यज्ञों एवं कल्याणकारी कार्यों के द्वारा किस प्रकार अभिव्यक्त होता है?

वह (परमात्मा) यज्ञों एवं कल्याणकारी कार्यों के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होता है, क्योंकि यज्ञ एवं कल्याणकारी कार्य उस (परमात्मा) के द्वारा उपस्थित या अभिव्यक्त होते हैं।

जीवन में सार्थकता :-

इसकी अनुभूति किस प्रकार की जाये कि परमात्मा प्रत्येक वस्तु और प्रत्येक प्राणी में अभिव्यक्त होते हैं?

अथर्ववेद 13.4.29 से 39 तक सभी मन्त्रों का एक सूत्र यह व्यक्त करना है कि परमात्मा भिन्न-भिन्न असंख्य कार्यों, शरीरों, रूपों और अवस्थाओं के माध्यम से अभिव्यक्त हो रहे हैं जिसका सरल कारण है कि वे सभी कार्य, शरीर, रूप और अवस्थाएँ भी उस (परमात्मा) से ही उपस्थित या अभिव्यक्त हो रहे हैं।

सामान्य रूप से जब भी कोई व्यक्ति किसी नई वस्तु की खोज या निर्माण करता है तो वह उस नई निर्मित वस्तु या खोज से जाना जाता है। कम्पनियाँ अपने उत्पादों से जानी जाती हैं, क्योंकि उन्होंने उन नये उत्पादों की खोज या उनका निर्माण किया है और इसके विपरीत वे उत्पाद भी अपनी-अपनी कम्पनियों के नाम से जाने जाते हैं।

इसी प्रकार जब हम इस सृष्टि में कुछ भी देखते हैं, जीव या निर्जीव, हमें अपनी चेतना को उस सर्वोच्च वास्तविकता के स्तर तक ले जाना चाहिए कि प्रत्येक वस्तु और प्राणी का निर्माता केवल परमात्मा ही है। अतः परमात्मा सभी स्थानों पर भिन्न-भिन्न रूपों में अभिव्यक्त होता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.40

स यज्ञस्तस्य यज्ञः स यज्ञस्य शिरस्कृतम् ।।40।।

(सः) वह (परमात्मा) (यज्ञः) यज्ञ है, संयुक्त करने वाला और पृथक् करने वाला (तस्य) उसका (यज्ञः) यज्ञ है, संयुक्त करने वाला और पृथक् करने वाला (सः) वह (परमात्मा) (यज्ञस्य) यज्ञ का, संयुक्त करने वाला और पृथक् करने वाला (शिरः) सिर, मुख्य भाग (कृतम्) बनाया गया।

व्याख्या :-

यज्ञ अर्थात् सृष्टि में सबको संयुक्त करने और पृथक् करने की प्रधान शक्ति का सिर अर्थात् मुख्य भाग क्या है?

वह (परमात्मा) यज्ञ है जो सृष्टि में सबको संयुक्त करने और पृथक् करने की शक्ति है। यज्ञ उस परमात्मा का है अर्थात् सबको संयुक्त करने और पृथक् करने की शक्ति। वही यज्ञ का सिर अर्थात् मुख्य भाग है।

जीवन में सार्थकर्ता :-

परमात्मा यज्ञ का सिर कैसे बना?

यज्ञ कैसे करें?

ऐसा कार्य करना जो आपके अपने लिए नहीं है, परन्तु सबके कल्याण के लिए है, निश्चित रूप से यज्ञ है।

परमात्मा ने इस सृष्टि को बनाया, सर्वोच्च आवास, अपने लिए नहीं, निश्चित रूप से सृष्टि के सब प्राणियों के लिए। इसलिए वह स्वयं इस सृष्टि के रूप में दिखाई देता है अर्थात् वह स्वयं यज्ञ है।

यह यज्ञ उसका है। वह सृष्टि का स्वामी है। वह इस यज्ञ का मुखिया है। इसका अभिप्राय है कि सारी सृष्टि में जिस किसी के द्वारा भी यज्ञ किया जा रहा है उसका प्राप्तकर्ता भी वही है। इसलिए दूसरों के लिए जीना प्रारम्भ करो। आपको जीवन यज्ञ बन जायेगा और सीधा परमात्मा तक पहुँचेगा।

वह व्यक्ति जो किसी भी कार्य को यज्ञ के रूप में करने का दायित्व लेता है अर्थात् अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए, वह उस कार्य का प्रतीक बन जाता है। वह कार्य निश्चित रूप से उसे उजागर करता है और वह उस कार्य का मुखिया बन जाता है। यज्ञ के बाद क्या होता है, इसकी व्याख्या अथर्ववेद 13.4.41 में दी गई है।

(सः यज्ञः तस्य यज्ञः स यज्ञस्य शिरस्कृतम्)

वह (परमात्मा) यज्ञ है। यज्ञ उस परमात्मा का है। वही यज्ञ का सिर अर्थात् मुख्य भाग है।

AV 13.4.41

स स्तनयति स वि द्योतते स उ अश्मानमस्यति ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(सः) वह (परमात्मा, यज्ञकर्त्ता) (स्तनयति) बादलों की तरह गर्जता है (सः) वह (परमात्मा) (वि द्योतते) भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रकाश उत्पन्न करता है (सः) वह (परमात्मा) (उ) और (अश्मानम्) पत्थर, भारी खजाना (अस्यति) गिराता है।

व्याख्या :-

यज्ञ के बाद क्या होता है?

अग्नि यज्ञ करने के उपरान्त, उसे परमात्मा प्राप्त करता है और वह परमात्मा की शक्ति बन जाता है। इसके बाद वह (परमात्मा), यज्ञकर्त्ता, बादलों की तरह गर्जता है; वह भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रकाश पैदा करता है; वह पत्थर गिराता है अर्थात् भारी खजाना (बर्फीली गेंदों के रूप में)।

जीवन में सार्थकर्त्ता :-

दिव्य यज्ञ के तीन परिणाम क्या हैं?

सैद्धान्तिक रूप से वही अनुपात उस व्यक्ति पर लागू होगा जो किसी विशेष कार्य को यज्ञ की तरह सबके कल्याण के लिए करने का दायित्व लेता है।

उस सम्बन्धित कार्य के सम्बन्ध में उसका ज्ञान अत्यन्त उच्च स्तर तक पहुँच जाता है और गर्जना करते हुए ध्वनि करता है और समाज पर अपना प्रभाव डालता है।

दूसरी अवस्था में, वह और उसका यज्ञ कार्य एक तरंग, एक चमक और एक प्रसिद्धि पैदा करता है जो अनेकों लोगों का ध्यान आकर्षित करता है।

अन्त में, वह और उसका यज्ञ कार्य लोगों के कल्याण के लिए भारी मात्रा में लाभ की वर्षा करना प्रारम्भ कर देता है।

अतः कोई भी छोटा या बड़ा कार्य यदि यज्ञ की भावना के साथ सम्पन्न किया जाये तो उसके तीन परिणाम होते हैं।

(क) गर्जना अर्थात् उस कार्य के बारे में जोरदार ध्वनि।

(ख) प्रकाश अर्थात् चमक और प्रसिद्धि का उत्पन्न होना।

(ग) लाभों की वर्षा अर्थात् अनेकों का कल्याण।

(स स्तनयति स वि द्योतते स उ अश्मानमस्यति)

वह (परमात्मा), यज्ञकर्त्ता, बादलों की तरह गर्जता है; वह भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रकाश पैदा करता है; वह पत्थर गिराता है अर्थात् भारी खजाना (बर्फीली गेंदों के रूप में)।

AV 13.4.42

पापाय वा भद्राय वा पुरुषायासुराय वा।

(पापाय वा) चाहे वह पापी हो (भद्राय वा) चाहे वह उत्तम, श्रेष्ठ हो (पुरुषाय) एक सामान्य व्यक्ति (असुराय वा) चाहे वह असामाजिक, राष्ट्र विरोधी, मानवता विरोधी या दिव्यता विरोधी हो।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



व्याख्या :-

यज्ञ किसको लाभान्वित करते हैं?

वास्तविक यज्ञ प्रभाव कभी किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह सभी जीवों और निर्जीव वस्तुओं को भी प्राप्त होता है, चाहे वह चाहे वह पापी हो; चाहे वह उत्तम, श्रेष्ठ हो; चाहे वह एक सामान्य व्यक्ति हो; चाहे वह असामाजिक, राष्ट्र विरोधी, मानवता विरोधी या दिव्यता विरोधी हो।

जीवन में सार्थकर्ता :-

यज्ञ बिना भेदभाव के लाभ क्यों देते हैं?

यज्ञ का सिद्धान्त बिना भेदभाव के सबका कल्याण करना ही है, क्योंकि परमात्मा स्वयं इस सृष्टि के यज्ञ का प्रतीक है। जिन्होंने स्वयं को और असंख्य दिव्यताओं के रूप में अपनी शक्तियों को सबके कल्याण के लिए अभिव्यक्त किया है – सभी जीवों एवं निर्जीव वस्तुओं के लिए।

AV 13.4.43

यद्वा कृणोष्योषधीर्यद्वा वर्षसि भद्रया यद्वा जन्यमवीवृधः।

(यत्) जो (वा) निश्चित रूप से (कृणोषि) बनाता है (औषधिः) औषधियाँ (जड़ी-बूटियाँ, अनाज आदि) (यत् वा) जो निश्चित रूप से (वर्षसि) वर्षा करता है (भद्रया) उत्तम रूप में, सबके कल्याण के लिए (यत् वा) जो निश्चित रूप से (जन्यम्) सभी पैदा हुए जीवों का (अवीवृधः) वृद्धि, उन्नति।

व्याख्या :-

सभी पैदा हुए जीवों के पालन-पोषण के समस्त कल्याण कार्य कौन करता है?

जो निश्चित रूप से औषधियाँ बनाता है अर्थात् जड़ी-बूटियाँ, अनाज आदि; जो निश्चित रूप से सबके कल्याण के लिए उत्तम रूप से वर्षा करता है; जो निश्चित रूप से सभी जीवों का संवर्द्धन और उनकी प्रगति का कारण है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा किस प्रकार से सबके पालक-पोषक के रूप में स्थापित है।

परमात्मा के सभी विशेष कल्याण कार्य, समस्त पैदा हुआ के लिए, निश्चित रूप से उसे एक पिता की तरह सबके सर्वोच्च पालक-पोषक के रूप में स्थापित करते हैं। उसने स्वयं सबको उत्पन्न किया और इसीलिए वह सबका पालक-पोषक बना।

AV 13.4.44

तावांस्ते मघवन्महिमोपो ते तन्वः शतम्।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(तावान) इतना अधिक (उसके पालन—पोषण के समान बड़ा) (ते) आपका (मघवन) सबसे धनी, परमात्मा (महिमा) महिमा (उपो) और (ते) आपके (तन्वः) शक्तियाँ, दायित्व (शतम्) सैकड़ों।

व्याख्या :-

परमात्मा की महिमा कितनी है?

परमात्मा सबसे धनी! आपकी महिमाएँ सैकड़ों हैं अर्थात् इतनी बड़ी हैं जितनी आपकी पालन—पोषण शक्ति। आपकी शक्तियाँ और दायित्व सैकड़ों हैं अर्थात् असंख्य।

जीवन में सार्थकता :-

दूसरों का ध्यान रखने के कार्य किस प्रकार यज्ञ कार्यों में परिवर्तित हो जाते हैं और हमारी महिमा बन जाते हैं?

सभी जीवों के लिए परमात्मा की देख—रेख असीम हैं। अतः उसकी महिमाएँ भी असीम हैं।

इसी प्रकार जब एक व्यक्ति धनी होता है, उसकी शक्तियाँ, उसका स्वामित्व और परिणामस्वरूप उसके दायित्व भी अनुपातिक रूप से बढ़ जाते हैं। उसकी महिमा इन शक्तियों और स्वामित्व के अनुपात में नहीं बढ़ती अपितु दूसरों की देख—रेख के अनुपात में बढ़ती है। इसलिए केवल दूसरों की देख—रेख ही हमारे कार्यों को यज्ञ में परिवर्तित करेगी जो परमात्मा के द्वारा स्वीकार होते हैं और अन्य लोगों के द्वारा महिमा मंडित होते हैं।

AV 13.4.45

उपो ते बध्वे बद्धानि यदि वासि न्य बुदम्।

(उपो) और भी (ते) आपके (बध्वे) बन्धन में, नियमों में (बद्धानि) बंधे हैं (यदि व) क्योंकि आप (असि) हो (न्यबुदम्) नियम रूप से सब जगह छाये हुए।

व्याख्या :-

सभी जीव परमात्मा के बन्धन और शासन में क्यों जीते हैं?

परमात्मा से सभी कल्याणकारी दायित्वों को प्राप्त करने के बाद सभी जीव आपके बन्धन और आपके नियमों में बंधे हैं, क्योंकि आप सब जगह छाये रहते हो।

जीवन में सार्थकता :-

एक दाता के क्या अधिकार और दायित्व हैं?

यदि एक दाता और प्राप्तकर्ता के बीच में कोई नैतिक या आध्यात्मिक बन्धन न हो तो उसका क्या परिणाम होगा?

सभी पैदा हुआ को असंख्य कल्याण देने के बाद, वह नियमित रूप से सब जगह छा जाता है जिससे वह सब पर भीतर से निगरानी रख सके, इसलिए हर कोई सदैव और प्राकृतिक रूप से उसके बन्धन और उसके नियमों में बंधा रहता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इसी प्रकार, प्रत्येक दाता, अपनी प्रजा का कल्याण करने के उपरान्त, उनके मस्तिष्क और हृदय में सम्मान का स्थान प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार, एक दाता प्राप्तकर्ता के मन में छा जाता है। यह उसका अधिकार और दायित्व बन जाता है कि वह प्राप्तकर्ताओं को अनुशासन में रखने के लिए उन पर नजर रखे, बेशक यह निगरानी प्यार, देख-रेख और सहानुभूति के कारण ही होती है। माता-पिता, सामाजिक-आध्यात्मिक नेता, नौकरी देने वाले नियोक्ता और दानी अपनी प्रजाओं के साथ स्थाई संगति के लिए अपेक्षित होते हैं। बिना नैतिक निगरानी के केवल लाभ देते रहने से प्रजा हर प्रकार से मुक्त हो जाती है और दान में प्राप्त वस्तुओं के दुरुपयोग की सम्भावना से ग्रस्त हो जाती है। यदि कोई नैतिक-आध्यात्मिक बन्धन नहीं होगा तो किसी प्रकार का अनुशासन भी नहीं होगा। दूसरी तरफ, बन्धन न होने पर, यह भी सम्भावना बनी रहती है कि भविष्य में दाता अपना अनुदान देना बन्द कर दे।

AV 13.4.46

भूयानिन्द्रो नमुराद्भूयानिन्द्रासि मृत्युभ्यः।

(भूयान्) अधिक शक्तिशाली (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (नमुरात्) न मरने वाला, अविनाशी (कारण संसार, मूल प्रकृति) (भूयान्) अधिक शक्तिशाली (इन्द्रः) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (असि) है (मृत्युभ्यः) मृत्यु के योग्य (कार्य संसार)।

व्याख्या :-

प्रकृति की कारण शक्ति और कार्य रूप प्रकृति से भी अधिक कौन सर्वशक्तिमान है? सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप न मरने वाली शक्तियों अर्थात् प्रकृति की अविनाशी कारण शक्ति और मूल प्रकृति से भी अधिक शक्तिशाली हो। आप उनसे भी अधिक शक्तिशाली हो जो मरने के योग्य हैं अर्थात् कार्य रूप या निर्मित संसार।

जीवन में सार्थकता :-

अहंकार रहित और विनम्र मन को कैसे बनाकर रखा जाये?

हमें यह नियमित चेतना बनाकर रखनी चाहिए कि सर्वोच्च दाता स्वाभाविक रूप से सर्वोच्च नियंत्रक है और वह निश्चित रूप से इस सृष्टि की सबसे अधिक शक्तिशाली वस्तु से भी अधिक शक्तिशाली है। वह सर्वशक्तिमान है। यह नियमित चेतना ही हमें सभी उद्देश्यों के लिए उसके साथ बांध सकती है और हमें अहंकार रहित कर सकती है।

हमें बौद्धिक रूप से, साधनों की दृष्टि से या आध्यात्मिक रूप से सभी शक्तिशाली लोगों की उपस्थिति में स्वयं को अहंकार रहित और विनम्र मानसिकता वाला बनाकर रखना चाहिए।

जीवन के किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए आपको हमेशा एक विद्यार्थी की तरह महसूस करना चाहिए, किसी से भी कुछ भी सीखने के लिए तत्पर।

AV 13.4.47

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



भूयानरात्याः शच्याः पतिस्त्वमिन्द्रासि विभूः प्रभूरिति त्वोपास्महे वयम् ।

(भूयान्) अधिक शक्तिशाली (अरात्याः) शत्रुओं, बुराईयों और अपवित्रों से (शच्याः) शक्ति, बुद्धि और गति (पतिः) संरक्षक (त्वम्) आप (इन्द्र) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा (असि) हो (विभूः) सर्वत्र छाये हुए (प्रभूः) सबसे अधिक शक्तिशाली, सर्वशक्तिमान (इति) इस रूप में, इन लक्षणों के साथ (त्वा) आप (उपास्महे) पूजा, निकट बुलाना (वयम्) हम ।

व्याख्या :-

हमें किसकी पूजा करनी चाहिए और अपने निकट बुलाना चाहिए?

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा! आप शत्रुओं, बुराईयों और अपवित्रताओं से भी अधिक शक्तिशाली हो; आप संरक्षक हो, शक्ति हो, बुद्धि हो और गति हो; आप सब जगह आच्छादित हो ।

सर्वशक्तिमान, सबसे अधिक शक्तिशाली, परमात्मा! हम आपकी इसी रूप में पूजा करते हैं और अपने निकट बुलाते हैं ।

जीवन में सार्थकता :-

अनुभूति के लिए परमात्मा की पूजा कैसे करें?

अपनी प्रार्थनाओं की सफलता के लिए भिन्न-भिन्न दिव्य शक्तियों की पूजा और उनका आह्वान कैसे करें?

प्रत्येक व्यक्ति शक्तिशाली लोगों के साथ निकटता की कामना करता है। इस सृष्टि में सबसे अधिक शक्तिशाली परमात्मा है। अतः हम उस सर्वशक्तिमान, परमात्मा से दूरी को किसी प्रकार से भी सहन नहीं कर सकते। उसकी पूजा तभी सम्भव है, यदि हम वास्तविकता में उसकी सर्वशक्तिमानता की अनुभूति करें और उसका सम्मान करें तथा उस सर्वोच्च चेतना की ध्यान अवस्था में पूजा करें। क्योंकि वह सर्वविद्यमान शक्ति है। इसलिए उसकी अनुभूति प्राप्त करने के लिए हमें एक स्थान से दूसरे स्थान जाने की आवश्यकता नहीं है। वास्तविक और प्रभावशाली पूजा तो उसकी अनुभूति में ही है जिसके लिए हमें पूरी तरह से अहंकार रहित और इच्छा रहित होना पड़ेगा।

दूसरी तरफ, लोग दिव्य शक्तियों की पूजा करते हैं और उनसे अलग-अलग पदार्थों या सांसारिक प्रार्थनाओं की सफलता की कामना करते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि भिन्न-भिन्न दिव्य शक्तियाँ संकल्पवान लोगों की प्रार्थनाओं का समर्थन करती हैं, परन्तु प्रार्थनाओं से भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि हम अपनी प्रार्थनाओं को प्राप्त करने के लिए एकाग्रचित्त प्रयास करें।

AV 13.4.48

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत ।

(नमस्ते – नमः ते) आपको नमन (अस्तु) हो (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (पश्य) देखो (मा) मुझे (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) ।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमें किसको नमन करना चाहिए?

हमारा नमन आपके लिए है, दृष्टा, परमात्मा के लिए, जो सबको देखता है। हे दृष्टा, परमात्मा! कृपया मुझे देखो।

जीवन में सार्थकता :-

सबके दृष्टा को नमन प्रस्तुत करने का क्या उद्देश्य है?

अपने वृद्धजनों को नमन करने का क्या उद्देश्य है?

परमात्मा इस सृष्टि में सर्वविद्यमान है। अतः हमें इस प्रार्थना के साथ उस परमात्मा को ही नमन करना चाहिए कि वह हमें भी देखे। इस प्रकार हम अपने सर्वोच्च नियंत्रक से प्रार्थना करते हैं कि वह हम पर नजर रखे और प्रतिक्षण हमें प्रेरित करे।

इसी प्रकार हम अपने वृद्धजनों को भी इस आशा के साथ नमन करते हैं कि वे अपना निगरानी पूर्ण आशीर्वाद हम पर बनाये रखें।

(नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत)

हमारा नमन आपके लिए है, दृष्टा, परमात्मा के लिए, जो सबको देखता है। हे दृष्टा, परमात्मा! कृपया मुझे देखो।

AV 13.4.49

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन।

(अन्नाद्येन) खाद्य अनाजों के साथ (यशसा) विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ (तेजसा) तपस्याओं के साथ (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

व्याख्या :-

हमें परमात्मा को किन अवस्थाओं में नमन करना चाहिए?

मेरा नमन आपको है, दृष्टा, परमात्मा को, जो सबको देखता है। हे दृष्टा, परमात्मा कृपया मुझे देखो — अन्न अर्थात् अनाजों आदि के साथ; यशसा अर्थात् विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ; तेजस अर्थात् तपस्यापूर्ण जीवन के साथ; ब्राह्मण वर्चसेन अर्थात् परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

जीवन में सार्थकता :-

पवित्रता का क्या महत्त्व है?

श्रद्धापूर्ण आध्यात्मिक जीवन में या भौतिकवादी संग्रहण के जीवन में सफलता तभी सम्भव है जब हर प्रकार से हमारे पास पवित्रता का बल हो — भोजन में पवित्रता, कार्य में पवित्रता और ज्ञान आदि में पवित्रता। समग्र पवित्रताओं के साथ ही परमात्मा हमारे नमन को स्वीकार करते हैं और परमात्मा हमें सदैव इन्हीं पवित्रताओं में देखना चाहते हैं। अतः हमें आध्यात्मिक रूप से या भौतिक रूप से प्रगति के लिए अपने जीवन के सभी आयामों में पूर्ण पवित्रता को सुनिश्चित करना चाहिए।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.50

अम्भो अमो महः सह इति त्वोपास्महे वयम् ।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत ।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ।

(अम्भः) सब जगह आच्छादित, सर्वविद्यमान (अमः) सबकुछ जानने वाला, सर्वज्ञाता (महः) महान्, सर्वोच्च दिव्य, पूजा के योग्य (सहः) सहन करने वाला, सर्वोच्च शक्तिमान (इति) इस रूप में, इन लक्षणों के साथ (त्वा) आप (उपास्महे) पूजा, निकट बुलाते हैं (वयम्) हम (नमस्ते – नमः ते) आपको नमन (अस्तु) हो (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (पश्य) देखो (मा) मुझे (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (अन्नाद्येन) खाद्य अनाजों के साथ (यशसा) विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ (तेजसा) तपस्याओं के साथ (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ ।

व्याख्या :-

परमात्मा के तीन सर्वोच्च लक्षण क्या हैं?

अपने नमन के बदले हम परमात्मा से क्या चाहते हैं?

सर्वविद्यमान अर्थात् सब जगह आच्छादित, सर्वज्ञाता अर्थात् सबको जानने वाला, महान् सर्वोच्च, पूजा के योग्य, सर्वशक्तिमान अर्थात् सबसे शक्तिशाली और सबको सहने वाला! हम इन्हीं लक्षणों के साथ आपकी पूजा करते हैं और आपको अपने निकट बुलाते हैं ।

मेरा नमन आपको है, दृष्टा, परमात्मा को, जो सबको देखता है । हे दृष्टा, परमात्मा कृपया मुझे देखो – अन्न अर्थात् अनाजों आदि के साथ; यशसा अर्थात् विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ; तेजस अर्थात् तपस्यापूर्ण जीवन के साथ; ब्राह्मण वर्चसेन अर्थात् परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ ।

AV 13.4.51

अम्भो अरुणं रजतं रजः सह इति त्वोपास्महे वयम् ।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत ।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ।

(अम्भः) सर्वविद्यमान, सब जगह आच्छादित (अरुणम्) ज्ञान से प्रकाशित (रजतम्) आनन्द का स्रोत (रजः) वैभव से परिपूर्ण (सहः) सहन करने वाला, सर्वोच्च शक्तिमान (इति) इस रूप में, इन लक्षणों के साथ (त्वा) आप (उपास्महे) पूजा, निकट बुलाते हैं (वयम्) हम (नमस्ते – नमः ते) आपको नमन (अस्तु) हो (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (पश्य) देखो (मा) मुझे (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (अन्नाद्येन) खाद्य अनाजों के साथ (यशसा) विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ (तेजसा) तपस्याओं के साथ (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ ।

व्याख्या :-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ज्ञान के प्रकाश और आनन्द का स्रोत कौन है?

सर्वविद्यमान अर्थात् सब जगह आच्छादित, ज्ञान से प्रकाशित, आनन्द का स्रोत, वैभव से परिपूर्ण, सर्वशक्तिमान अर्थात् सबसे शक्तिशाली और सबको सहने वाला! हम इन्हीं लक्षणों के साथ आपकी पूजा करते हैं और आपको अपने निकट बुलाते हैं।

मेरा नमन आपको है, दृष्टा, परमात्मा को, जो सबको देखता है। हे दृष्टा, परमात्मा कृपया मुझे देखो – अन्न अर्थात् अनाजों आदि के साथ; यशसा अर्थात् विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ; तेजस अर्थात् तपस्यापूर्ण जीवन के साथ; ब्राह्मण वर्चसेन अर्थात् परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

AV 13.4.52

उरुः पृथुः सुभूर्भुव इति त्वोपास्महे वयम्।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन।

(उरुः) बहुत बड़ा, अति उत्तम (पृथुः) विशाल, महत्त्वपूर्ण (सुभूः) समस्त वस्तुओं में उत्तम रूप में विद्यमान (भुवः) सब जगह आच्छादित, शुद्ध ब्रह्म (इति) इस रूप में, इन लक्षणों के साथ (त्वा) आप (उपास्महे) पूजा, निकट बुलाते हैं (वयम्) हम (नमस्ते – नमः ते) आपको नमन (अस्तु) हो (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (पश्य) देखो (मा) मुझे (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (अन्नाद्येन) खाद्य अनाजों के साथ (यशसा) विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ (तेजसा) तपस्याओं के साथ (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

व्याख्या :-

इस सृष्टि में सबसे बड़ा तथा सर्वोत्तम, विशाल तथा महत्त्वपूर्ण कौन है?

इस सृष्टि में सब वस्तुओं में उत्तम रूप में विद्यमान, सर्वत्र आच्छादित, शुद्ध ब्रह्म ही सबसे बड़ा तथा सर्वोत्तम है, विशाल तथा महत्त्वपूर्ण है। हम इन्हीं लक्षणों के साथ आपकी पूजा करते हैं और आपको अपने निकट बुलाते हैं।

मेरा नमन आपको है, दृष्टा, परमात्मा को, जो सबको देखता है। हे दृष्टा, परमात्मा कृपया मुझे देखो – अन्न अर्थात् अनाजों आदि के साथ; यशसा अर्थात् विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ; तेजस अर्थात् तपस्यापूर्ण जीवन के साथ; ब्राह्मण वर्चसेन अर्थात् परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

AV 13.4.53

प्रथो वरो व्यचो लोक इति त्वोपास्महे वयम्।

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत।

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन।

(प्रथः) सर्वत्र अच्छी तरह जाना गया (वरः) वरण करने के लिए उत्तम (व्यचः) सबमें पूरी तरह मिश्रित (लोकः) सबका दृष्टा (इति) इस रूप में, इन लक्षणों के साथ (त्वा) आप (उपास्महे) पूजा, निकट बुलाते

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हैं (वयम्) हम (नमस्ते – नमः ते) आपको नमन (अस्तु) हो (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (पश्य) देखो (मा) मुझे (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (अन्नाद्येन) खाद्य अनाजों के साथ (यशसा) विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ (तेजसा) तपस्याओं के साथ (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

व्याख्या :-

कौन सर्वत्र अच्छी तरह जाना जाता है और वरण करने के लिए सर्वोत्तम है?

कौन सबमें मिश्रित है और सबको देखता है?

सर्वत्र अच्छी तरह जाना जाता है, वरण करने के लिए सर्वोत्तम है, सबमें मिश्रित है और सबका दृष्टा है, हम इन्हीं लक्षणों के साथ आपकी पूजा करते हैं और आपको अपने निकट बुलाते हैं।

मेरा नमन आपको है, दृष्टा, परमात्मा को, जो सबको देखता है। हे दृष्टा, परमात्मा कृपया मुझे देखो – अन्न अर्थात् अनाजों आदि के साथ; यशसा अर्थात् विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ; तेजस अर्थात् तपस्यापूर्ण जीवन के साथ; ब्राह्मण वर्चसेन अर्थात् परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ।

AV 13.4.54

भवद्वसुरिदद्वसुः संयद्वसुरायद्वसुरिति त्वोपास्महे वयम्।

(भवद्वसुः) सभी सम्पदाओं को पैदा करने वाला और उपलब्ध कराने वाला (इदद्वसुः) सभी श्रेष्ठ पुरुषों को सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कराने वाला (संयद्वसुः) सबका नियामक (आयद्वसुः) सभी आवासों को विस्तृत करने में सक्षम (इति) इस रूप में, इन लक्षणों के साथ (त्वा) आप (उपास्महे) पूजा, निकट बुलाते हैं (वयम्) हम।

व्याख्या :-

कौन सबका उत्पत्तिकर्ता, उपलब्ध कराने वाला और सबका नियामक है?

समस्त सम्पदा का उत्पत्तिकर्ता और उपलब्ध करवाने वाला जो सभी श्रेष्ठ पुरुषों को सुख-सुविधाएँ उपलब्ध करवाता है, सभी शरीरों का नियामक है और सभी आवासों को विस्तृत करने में सक्षम है, हम इन्हीं लक्षणों के साथ आपकी पूजा करते हैं और आपको अपने निकट बुलाते हैं।

AV 13.4.55

नमस्ते अस्तु पश्यत पश्य मा पश्यत।

(नमस्ते – नमः ते) आपको नमन (अस्तु) हो (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा) (पश्य) देखो (मा) मुझे (पश्यत) दृष्टा (परमात्मा)।

अथर्ववेद 13.4.48 के समान।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



AV 13.4.56

अन्नाद्येन यशसा तेजसा ब्राह्मणवर्चसेन ।

(अन्नाद्येन) खाद्य अनाजों के साथ (यशसा) विशाल संख्या के लोगों की स्वीकार्यता के साथ (तेजसा) तपस्याओं के साथ (ब्राह्मण वर्चसेन) परमात्मा के प्रखर ज्ञान के साथ ।

अथर्ववेद 13.4.49 के समान ।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171